अध्याय **11**

शक्ति कहाँ गई?

घर पहुँचकर युवराज ने गाड़ी की चाबी मेज पर रखी और सोफ़े पर बैठ गया। सामने पानी का गिलास रखा था। उसने उसे उठाया, फिर बिना पिए वापस रख दिया।

जूते उतारते समय उसे पता चला कि एक जूते की डोरी खुली थी। शायद वहीं खुली होगी, जब वह सड़क के किनारे गिरा था। वह झुका, डोरी पकड़कर बैठा रहा, फिर पूरा जूता उतारकर पैरों से दूर सरका दिया। घर तक पहुँचने की जल्दी में उसने एक बार भी नहीं सोचा था कि भीतर आकर क्या करेगा। अब उसे लग रहा था कि बाहर गाड़ी में बैठा रहता तो कम-से-कम किसी के सामने उसका चेहरा पढ़ लेने का डर नहीं होता।

उसने फ़ोन में समर का नाम खोला। उसे लिखना आसान होता। समर ने दोपहर में मशीन फिर से चलते देखी थी। उसे आरंभ से सब बताना भी नहीं पड़ता। युवराज ने लिखा, ‘कल वीर से कुछ मत पूछना।’ फिर उसे लगा कि यही संदेश पढ़कर समर उससे दस प्रश्न पूछेगा। उसने शब्द मिटा दिए और फ़ोन उलटकर रख दिया।

वह रास्ते भर यही सोचता आया था कि वीर के पास कोई सुरक्षा-कवच होगा। हो सकता है वह इतना छोटा हो कि कपड़ों के भीतर दिखाई न दे। लेकिन जब वीर ने हथेली उठाई थी, नीली चमक उसकी उँगलियों के इतने पास जाकर बुझी थी कि युवराज को अब भी उसका चेहरा साफ़ याद था। वीर ने पलक तक नहीं झपकाई थी।

उसने जेब से नियंत्रक निकाला। पिछला प्रहार अब भी दर्ज था। उपकरण के अनुसार शक्ति लक्ष्य तक पहुँची थी। वह स्क्रीन बुझाकर सोफ़े की पीठ से टिक गया। कुछ देर बाद उसने फिर वही स्क्रीन खोल ली।

“क्या हुआ? परेशान लग रहे हो।”

युवराज ने सिर उठाया। उसके पिता सामने खड़े थे। उनके हाथ में व्हिस्की का गिलास था।

“कॉलेज में कुछ हुआ?” उन्होंने पूछा।

युवराज ने उत्तर देने से पहले एक बार अपनी कलाई देखी। वीर की पकड़ का निशान अब हल्का पड़ गया था।

“पापा, एक बात पूछूँ?”

“पूछो।”

“क्या कोई गरीब आदमी भी शक्ति खरीद सकता है?”

पिता गिलास लेकर उसके सामने बैठ गए। “हाँ, क्यों नहीं? बस उसे एक हज़ार साल नौकरी करनी होगी।”

युवराज ने उनकी ओर देखा।

“और इस बीच कुछ खाना-पीना नहीं,” पिता ने हँसते हुए कहा। “वेतन का एक रुपया भी खर्च किया, तो फिर एक हज़ार साल से हिसाब आगे बढ़ जाएगा। सब जोड़ लेने के बाद शायद एक बार इस्तेमाल करने लायक शक्ति खरीद पाए।”

उन्हें लगा युवराज अब हँसेगा। वह मेज की ओर देखता रहा।

“क्या हमारे यहाँ से कोई शक्ति चोरी हो रही है, पापा?”

गिलास उनके होंठों तक पहुँचकर रुक गया। उन्होंने उसे नीचे किया।

“हमारे यहाँ से?”

“हाँ।”

इस बार पिता ने प्रश्न पूछने से पहले उसके चेहरे को ध्यान से देखा। उसकी बाँह नीचे खिसकी तो कलाई पर हल्का निशान दिखाई दिया।

“क्या हुआ है, युवराज? तुम घर आते ही चोरी की बात क्यों पूछ रहे हो?” उन्होंने गिलास मेज पर रख दिया। “आरंभ से बताओ।”

युवराज कुछ देर सोचता रहा कि बात कहाँ से शुरू करे। रात की घटना पहले बताता तो पिता पूछते कि वह वीर के पीछे गया ही क्यों था। और उस प्रश्न का उत्तर देने के लिए उसे दोपहर की बात भी बतानी पड़ती।

“आज प्रतियोगिता की प्रारंभिक जाँच थी,” उसने कहा। “आरव की टीम का उपकरण प्रदर्शन के बीच बंद हो गया। वीर ने तार देखे, फिर मशीन के पीछे हाथ रखा। उसके कुछ ही क्षण बाद स्क्रीन जल उठी।”

“किसी तार का जोड़ ढीला रहा होगा।”

“मुझे भी पहले यही लगा था। फिर लगा कि उसने कोई शक्ति इस्तेमाल की है।”

पिता ने गिलास उठाया। “और तुमने उससे पूछ लिया?”

युवराज ने अपनी कलाई से आस्तीन खींचकर नीचे कर ली। “मैंने उसे परखा।”

पिता ने एक घूँट लिया। “कैसे?”

“पुस्तकालय के बाहर। मैंने अपने नियंत्रक से उस पर प्रहार किया।”

गिलास के भीतर बर्फ का टुकड़ा घूमकर किनारे से लगा।

“पुस्तकालय के बाहर और कौन था?”

“विद्यार्थी आ-जा रहे थे। ईशा अंदर थी। आरव और काव्या आगे निकल गए थे।”

“अगर उनमें से कोई बीच में आ जाता?”

युवराज के पास उत्तर नहीं था। कुछ देर पहले वीर ने भी उससे यही पूछा था। तब वह कहना चाहता था कि उसका निशाना सही था। अब पिता के सामने उसे समझ आया कि इससे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता।

पिता ने गिलास से हाथ हटा लिया। “तुम्हारे नियंत्रक में प्रहार का विवरण रहता है। यह बात तुम जानते थे?”

“हाँ।”

“और कॉलेज में किसी ने तुम्हें देख लिया होता तो?”

युवराज ने पहली बार सीधे उनकी ओर देखा। “तब मुझे समझाना पड़ता कि मैंने ऐसा क्यों किया।”

“वही बात अब मुझे समझाओ।”

युवराज ने सोचा, वह कह सकता है कि वीर ने पहले ही प्रतियोगिता में कोई अनुचित लाभ लिया था। मगर मशीन दोबारा चलने के अतिरिक्त उसके पास कहने को कुछ नहीं था। “मैं चाहता था कि मेरा अनुमान सही निकले,” उसने कहा। “उस समय मुझे वही जानना था।”

पिता ने उसकी ओर कुछ देर देखा। फिर उन्होंने पूछा, “और जब तुमने प्रहार किया, तब तुम्हें क्या लगा?”

युवराज को पुस्तकालय का दरवाज़ा याद आया। प्रहार के ठीक बाद वह दरवाज़ा खुला था और ईशा बाहर आई थी। यदि वह एक पल पहले निकलती, तो वह वीर और उसके बीच होती। उसने यह बात पिता को बताई। बोलते समय उसकी दृष्टि पहली बार नियंत्रक से हटकर अपने हाथ पर गई।

“वीर नीचे बैठ गया था,” उसने आगे कहा। “उसने कहा कि बिजली का झटका लगा है। ईशा दौड़कर उसके पास आई। आरव उसे चिकित्सा कक्ष ले गया। मैं भी मान गया था कि उसे चोट लगी है। फिर मैंने उसकी बाँह देखी। उस पर लाल निशान तक नहीं था।”

पिता ने इस बार बीच में कुछ नहीं कहा। उन्होंने व्हिस्की का एक और घूँट लिया और उसकी ओर मुड़ गए।

“रात को मैं उससे फिर मिला,” युवराज ने कहा। “वहाँ उसके मित्र नहीं थे। मैंने पूछा कि उसने शक्ति कहाँ से खरीदी। उसने बताने से मना कर दिया।”

“उसके बाद?”

“उसने मुझे रोकने को कहा। फिर भी मैंने प्रहार किया।”

युवराज ने मेज पर रखा नियंत्रक उठा लिया, जैसे उस क्षण को समझाने के लिए हाथ में उसका होना आवश्यक हो।

“उसने बस हथेली सामने कर दी। बिजली उसके हाथ के पास पहुँची और बुझ गई। मैंने दूसरी बार शक्ति का स्तर बढ़ाया। सड़क के किनारे पड़े लोहे के टुकड़े से चिंगारी निकली। वीर वहीं खड़ा रहा।”

पिता ने अपना गिलास होंठों से हटाया। “कपड़ों के नीचे कोई कवच?”

“हो सकता था। इसलिए मैं उसके पास गया। उसने मेरी कलाई पकड़ी और मुझे पीछे धकेल दिया।” युवराज ने आस्तीन ऊपर कर ली। “नियंत्रक मेरे हाथ से छूट गया। उसने उठाकर मुझे वापस दे दिया।”

पिता ने पहली बार उसकी कलाई को पास से देखा। फिर उनकी दृष्टि नियंत्रक पर गई।

“उसने कुछ कहा?”

“कहा कि उसके मित्रों या किसी निर्दोष व्यक्ति पर दोबारा ऐसा प्रहार मत करना।” युवराज कुछ क्षण रुका। “फिर चला गया। उसके जाने के बाद मैंने नियंत्रक जाँचा। वह ठीक चल रहा था।”

उसके पिता ने हाथ बढ़ाया। युवराज ने नियंत्रक उनकी हथेली पर रख दिया। उन्होंने स्क्रीन खोली। उसमें रात के प्रहारों का विवरण दर्ज था। पहले प्रहार से दूसरे तक शक्ति का स्तर कितना बढ़ाया गया था, यह देखकर उनकी भौंहें सिकुड़ीं।

“तुमने इसे यहाँ तक बढ़ाया था?”

“हाँ।”

पिता ने स्क्रीन फिर देखी। जिस स्तर पर युवराज ने दूसरा प्रहार किया था, वहाँ साधारण बचाव का प्रश्न ही नहीं उठता था। और यदि वीर के पास उस स्तर का कवच था, तो वह भी अपने आप में एक प्रश्न था। ऐसी शक्ति का मूल्य बताकर वे कुछ देर पहले हँस रहे थे। अब उन्हें याद आया कि युवराज ने सबसे पहले मूल्य के बारे में ही क्यों पूछा था।

“उस लड़के के घर के बारे में क्या जानते हो?” उन्होंने पूछा।

“बहुत कम। कॉलेज में वह बाकी विद्यार्थियों की तरह रहता है। उसके पास इतनी महँगी शक्ति होगी, मैंने कभी सोचा भी नहीं था।”

“तुम्हें उसके घर का पता तक ठीक से मालूम नहीं, और तुमने मान लिया कि वह खरीद नहीं सकता?”

युवराज चुप रहा।

पिता ने नियंत्रक मेज पर रख दिया। “और मान लो वह खरीद नहीं सकता। तब भी केवल इस घटना से चोरी सिद्ध नहीं होती।”

“इसीलिए तो आपसे पूछ रहा हूँ,” युवराज ने धीरे से कहा। “क्या ऐसा हो सकता है? हमारे यहाँ से कोई शक्ति निकले और हमें पता भी न चले?”

पिता ने अपनी जगह बैठे-बैठे सामने की मेज पर उँगली से दो बिंदु बनाए।

“तुम यहाँ थे और वीर यहाँ?”

युवराज थोड़ा आगे झुका। “दूसरी बार मैं उसके और पास था।”

“दूसरी बार पास क्यों गए?”

“पहली बार मुझे लगा दूरी के कारण मेरी शक्ति कम पड़ गई।” उसने दोनों बिंदुओं के बीच की जगह देखी। “लेकिन मैं जितना पास गया, उतना साफ़ दिखाई दिया कि वह क्या कर रहा था।”

पिता ने अपनी उँगली मेज से हटा ली। अब तक वे उस लड़के के बारे में पूछ रहे थे। पहली बार उन्होंने दोनों प्रहारों को अलग-अलग समझना चाहा। उन्होंने युवराज से फिर पूछा कि पहले प्रहार के समय वीर कहाँ देख रहा था और दूसरे के समय उसने कौन-सा हाथ उठाया। युवराज ने हाथ उठाकर दिखाया। दिखाते हुए उसे वह क्षण याद आया जब उसे विश्वास था कि सामने खड़े लड़के को अब पीछे हटना ही पड़ेगा। उसके अपने हाथ में तब जितना भरोसा था, उतना अब वह याद भी नहीं कर पा रहा था।

पिता ने व्हिस्की का एक घूँट लिया। “मान लो उसने कहीं से शक्ति खरीद ली। या किसी ने उसे दे दी। तब भी तुम्हारा प्रहार उसकी शक्ति से टकराना चाहिए था। टकराया कहाँ?”

“कहीं नहीं।”

“तुमने अभी कहा था कि उसने हाथ सामने किया और बिजली बुझ गई।”

“बुझ गई, क्योंकि उसने उसे अपने भीतर खींच लिया, पापा।”

पिता ने गिलास मेज पर रख दिया। “तुमने यह देखा?”

युवराज ने अपनी हथेली सामने की। “चमक यहाँ तक आई थी। मुझे लगा अब उसके हाथ से भी कुछ निकलेगा। मैं पीछे हटने वाला था। लेकिन चमक उसकी हथेली के पास सिमट गई। फिर कुछ दिखाई नहीं दिया।”

“उसके हाथ पर कोई निशान?”

“मैं इतना पास था कि उसकी उँगलियाँ देख सकता था। उसने हाथ तक नहीं झटका। दूसरी बार भी यही हुआ।”

पिता ने नियंत्रक उठाया। दोनों प्रहार दर्ज थे। उन्होंने दूसरे प्रहार का स्तर देखा और स्क्रीन बंद कर दी।

“एक शक्ति दूसरी शक्ति को रोक सकती है,” उन्होंने कहा। “मैंने देखा है। लेकिन जो तुम बता रहे हो, उसमें उसे तुम्हारी शक्ति अपने भीतर लेनी पड़ी होगी।” उनकी उँगलियाँ नियंत्रक पर ठहरी रहीं। “उसने ऐसा कैसे किया?”

यह वही प्रश्न था जिसे युवराज घर आने के बाद से अपने मन में घुमा रहा था। उसे लगा था पिता किसी महँगे उपकरण का नाम ले देंगे, और बात वहीं समझ में आ जाएगी। अब वे स्वयं कुछ सोचते हुए अपना फ़ोन निकाल रहे थे।

उन्होंने एक नंबर मिलाया। दूसरी ओर से उत्तर आते ही वे सोफ़े से उठकर खिड़की के पास चले गए।

“सुनो, मुझे कुछ जानना है…”

आगे उनकी आवाज इतनी धीमी हो गई कि युवराज को शब्द सुनाई नहीं दिए। वह सोफ़े पर बैठा अपनी उँगली का नाखून दाँतों से कुतरता रहा। बीच-बीच में वह पिता की ओर देखता। उनकी पीठ उसकी ओर थी।

बीच में एक बार युवराज को लगा कि पिता उसकी ओर मुड़ने वाले हैं। उसने हाथ नीचे किया, पर पिता खिड़की के पास ही रुके रहे। उसने मेज पर रखा पानी फिर उठा लिया। गिलास होंठों से लगाया तो ध्यान आया कि घर आने के बाद उसने अब तक पानी की एक घूँट भी नहीं पी थी। आधा गिलास पीकर उसने उसे रखा। कुछ ही क्षण में उसका हाथ फिर मुँह तक पहुँच गया।

“सुनो, युवराज।”

युवराज ने झट से हाथ मुँह से हटा लिया। “हाँ... हाँ, पापा। बोलिए।”

पिता फ़ोन हाथ में लिए उसके पास लौट आए थे।

“कल कॉलेज में उस लड़के से सामान्य ढंग से बात करना। जैसे पहले करते थे।”

“अगर उसने कल रात की बात उठाई तो?”

“तो सुन लेना। उसे लगना चाहिए कि तुम उसकी बात समझ गए हो। उसने तुम्हें जो करने से मना किया था, वह दोबारा मत करना।” पिता ने मेज से नियंत्रक उठाया। “बाकी मैं देख लूँगा।”

वे वहाँ से चले गए। व्हिस्की का गिलास मेज पर ही रह गया। युवराज ने अपनी उँगली देखी। नाखून के पास की त्वचा छिल गई थी। उसे दर्द अब महसूस हुआ।